कैय्यट

वैयाकरण कैय्यट महर्षि पतंजलिकृत 'महाभाष्य' की 'प्रदीप' नामक टीका के रचयिता हैं। उनके पिता का नाम जैयटोपाध्याय था-

महाभाष्यार्णवाऽवारपारीणं विवृतिप्लवम्।
यथागमं विधास्येह कैय्यटो जैयटात्मज।।

कैय्यट कश्मीर के निवासी थे। 'काव्यप्रकाश' की 'सुधासागर' नामक टीका में उनका काल 18वीं शताब्दी बताया गया है।

भर्तृहरि ने 'वाक्यपदीयम्', 'स्वोपज्ञवृत्ति और 'महाभाष्यदीपिका'-रूपी अपनी ग्रन्थत्रयी में जिन गुरु गम्भीर दार्शनिक सिद्धान्तों को काव्यायित किया है, उन्हीं को सेतु-रूप में ग्रहण करके कैय्यट ने 'प्रदीप' का प्रणयन कर महाभाष्यार्णव को पार किया है। वेदर्षि कैय्यट ने अपने उपजीव्य पतंजलि एवं भर्तृहरि के अस्पष्ट भावों को जनसामान्य के लिए सुव्यक्त बनाकर व्याकरण - दर्शन में अपना अमूल्य योगदान दिया है। कहीं-कहीं वे इनसे अलग होकर भी अपनी बात कही है।